7

मसीही व्यक्तित्व

(कुलुस्सियों 3:1-17)

बदला हुआ जीवन के ढंग में दिखाई देता है।

आपका व्यक्तित्व विचारों और व्यवहारों का विशेष गट्ठा है जो आपको वह बनाता है जो आप हैं। इस अर्थ में हर किसी का व्यक्तित्व अलग होता है। परन्तु कुछ लोगों में इतनी समानताएं पाई जाती हैं कि मनोविज्ञानिकों के लिए विशेष प्रकार के व्यक्तित्वों की बात करना सम्भव हो जाता है: बहिमुखी और अन्तर्मुखी, प्रेरक और निष्क्रिय, सनकी और मजबूर आदि।

यदि इन शब्दों के द्वारा बताए गए लोगों में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं एक जैसी होने के कारण ऐसे व्यक्तित्वों में अन्तर करना सम्भव है, तो मसीही व्यक्तित्व में अन्तर करना भी सम्भव हो सकता है क्योंकि मसीही लोगों के विशेष व्यवहार में कुछ बातें समान रूप से पाई जाती हैं।

बेशक इसका अर्थ यह नहीं है कि सब मसीही लोग व्यक्तित्व के हर पहलू में समान होंगे या होने आवश्यक हैं। वैसे ही जैसे मसीही लोग लम्बे और छोटे, मोटे और पतले होते हैं, उसी प्रकार बहिर्मुखी या अन्तर्मुखी लोग या प्रेरक और निष्क्रिय लोग मसीही बन सकते हैं। तौभी यदि आप उन्हें देखें जो विश्वासी मसीही हैं, तो आप पाएंगे कि कि उन में कुछ बातें मिलती जुलती हैं जिनमें वे संसार से बहुत अलग होते हैं। व्यवहार की वे खुबियों को उन सब में पाई जाती हैं हम ''मसीही व्यक्तित्व'' कह सकते हैं। ऐसा व्यक्तित्व कैसा होता है और यह कैसे बढ़ सकता है ? तीन पगों वाली प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कुलुस्सियों 3:1-17 इसका उत्तर देता है।

पग एक: समझें कि अपने जीवनों को बदलने का हमारा मुख्य लक्ष्य मसीह के साथ हमारा नया सम्बन्ध है (कुलुस्सियों 3:1-4)

कुलुस्से के लोगों पर पाखंडी गुरुओं के प्रभाव में आने का खतरा था। पौलुस कहता है, ''चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, ...'' (कुलुस्सियों 2:8)। ये गुरु स्पष्टतया काफ़िरों के दर्शन शास्त्र (कुलुस्सियों 2:8) और यहूदी मत (कुलुस्सियों 2:16, 17) के मेल की शिक्षा दे रहे थे। परन्तु पाप की समस्या के लिए बेहतरीन ढंग वे संसार नियम ही दे सकते थे। पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को झूठे गुरुओं के नियमों के विरुद्ध मानने को चेतावनी दी: ''यह न छूना, उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना,'' जो ''मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षा अनुसार'' थे (कुलुस्सियों 2:20-22)। स्पष्टतया वे ऐसे नियम थे जो उनके मसीही बनने से पूर्व उनकी सांसारिक इच्छाओं पर काबू पाने का काम करते थे।

पौलुस कहता है कि अब ये नियम बेकार थे। ''इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार

गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं के रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता'' (कुलुस्सियों 2:20-23)। नियम वैधानिक रुकावटें कभी पाप करने से नहीं पाएंगे या पाप करने से रोकने के लिए हावी क्या बात होगी।

कुलुस्सियों 3:14 में पौलुस उस प्रश्न का उत्तर देता है कि मसीह के साथ अपने सम्बन्ध का ज्ञान हमें पाप करने से रोकता है। पौलुस कहता है कि (1) हम मसीह के साथ जी उठे हैं इसलिए हमें उन चीज़ों की खोज करनी चाहिए जो ऊपर की हैं (आयत 1)। (2) हम मर गए हैं और हमारा जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ है इसलिए हमें अपने मन उन बातों पर लगाने चाहिए जो ऊपर की हैं (आयतें 2, 3)। (3) हमारा प्रतिफल यह होगा कि जब मसीह प्रगट होगा तो हमें महिमा में उसके साथ प्रगट होंगे (आयत 4)। इसलिए हम अपने जीवनों में उन बातों को जो संसार की हैं मार डालें (आयत 5)।

जिस उद्देश्य के लिए पौलुस विनती करता है वह स्पष्ट है कि हम मसीह के हैं इसलिए हमें ऊपर की बातों की तलाश करनी चाहिए। हम अपने मन उन बातों पर लगाएं जो ऊपर की हैं। हम अपने अंदर सांसारिक बातों को मार डालें।

मसीह के साथ हमारा सम्बन्ध हमारे जीवनों को कैसे बदलता है। कई बातें ध्यान में आती हैं: (1) मसीही बनने पर, मसीह हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है; उसके लिए हमारे प्रेम का अर्थ है कि हम सांसारिक बातों को उससे कम करते हैं। (2) मसीह हमें इतना मज़बूत बना देता है कि हम परीक्षाओं पर जय पा सकते हैं। (3) यह ज्ञान कि मसीह ने हमें क्षमा कर दिया है हमें उद्धार पाए हुए रहने और की इच्छा करने और हमें पाप का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित करता है। (4) हम मसीही हैं इस कारण हम जानते हैं कि हमारे लिए संसार में पहले की तरह जीना आसान नहीं है। (5) हमारे प्रभु के पास सारा अधिकार है इसलिए हम उसकी बात को सुनना और उसकी आज्ञा मानना चाहते हैं; उसकी शिक्षाओं को मानकर हम पाप पर जय पाते हैं और मसीही व्यक्तित्व को विकसित करते हैं।

हम शायद मसीही व्यक्तित्व को बढ़ाने में नाकाम रहे हैं क्योंकि हम ने यह पहला कदम नहीं उठाया है। हम गलत उद्देश्यों पर निर्भर रहे हैं। हम नरक से बचने की इच्छा से ही प्रेरित रहे हैं और हम ने उन कई नियमों और कायदों के रूप में नये नियम के निर्देषों को देखा है जिन्हें मानना आवश्यक है जिन्हें हम नरक से दूर रहना चाहते हैं। मसीहियत का ऐसा ढंग ''गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता, और शारीरिक योगाभयास के भाव से ज्ञान का नाम'' ही है (कुलुस्सियों 2:20-23)। परन्तु अन्त में जैसा पौलुस ने कहा कि यह ''शारीरिक लालसाओं को रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता।'' हो सकता है कि मसीही जीवन जीने के अपने उद्देश्य के रूप में हम संसारिक नियमों पर बहुत देर से निर्भर रहे हों और मसीह के साथ अपनी संगति पर बहुत कम।

पग 2: सांसारिक व्यवहारों को मार डालो (कुलुस्सियों 3:5-11)

ध्यान दें कि पौलुस कहता कि हम संसारिक गुणों को ''मार डालें'' (आयत 5) यानी हम ''ये सब बातें छोड़ दें'' (आयत 8) और हम ने ''पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत

उतार डाला है'' (आयत 9)। हमें पापपूर्ण गुणों को ''मार डालना,'' ''छोड़ देना'' और ''उतार डालना'' आवश्यक है। यह मत सोचें कि आप सांसारिक व्यवहारों के साथ साथ रह सकते हैं! उनसे पीछा छुड़ाएं! उन्हें मार डालें, उन्हें कूड़ेदान में फैंक दें, उन्हें अपने जीवन से निकाल दें, उन्हें अपने स्वभाव से मिटा डालें!

किस को मार डालें?

वासना के पापों को नष्ट करें

''अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ ...'' (कुलुस्सियों 3:5)। ''व्यभिचार'' का अनुवाद ''अनैतिकता'' या ''*fornication*'' (NEB) और ''शारीरिक अनैतिकता'' (फिलिप्स) भी हुआ है। ''अशुद्धता'' का अनुवाद ''गंदगी'' ''गंदी सोच'' (फिलिप्स), ''निर्लजता'' (NEB) भी हुआ है। ''दुष्कामना'' का अनुवाद अन्य संस्करणों में ''बेहद लगाव'' (KJV), ''अनियन्त्रित आवेश'' (फिलिप्स), और ''वासना'' (NEB) हुआ है। ''बुरी लालसा'' का अनुवाद ''बुरी काम वासना'' और ''बुरी आकांक्षाएं'' हुआ है (NEB)। जब आप ''व्यभिचार,'' ''अशुद्धता,'' ''दुष्कामना'' और ''बुरी इच्छा'' जैसे शब्दों को सुनते हैं तो आपके मन में क्या आता है? मेरे ध्यान में तो अपना आधुनिक युग ही आता है। आप टैलिविज़न कार्यक्रम विशेषकर सोप ओपेरा को ''व्यभिचार,'' ''अशुद्धता,'' ''दुष्कामना,'' और ''बुरी लालसा'' की भारी खुराक के बिना कैसे देख सकते हैं तौभी चाहे वे चीज़ें संसार की पहचान हैं पर मसीही लोगों की पहचान नहीं हैं!

शायद हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि यह आयत न केवल व्यभिचार के कार्य की बल्कि वासना के पाप की भी मनाही करती है। मसीही लोगों को लालसा नहीं करनी चाहिए! इसके अलावा उसे ऐसी परिस्थितियों से बचना चाहिए जो उसे लालसा करने के लिए उकसा सकती हैं और ऐसे काम करने से बचना चाहिए जो दूसरों से लालसा करवा सकते हैं। हमारे पास यहां पोर्नोग्राफी से दूर रहने, नाचने जैसी गतिविधियों ने बचने की ज़बर्दस्त शुरुआत है, जो लालसा से सम्बन्धित है कि सभ्य पहनावा पहनें।

अनैतिक कार्यों और कामुक विचारों से बचने की आवयकता क्यों है? ''इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है'' (कुलुस्सियों 3:6)। हम थोड़ी देर के लिए ऐसे पापों से पीछा छुड़ा सकते हैं, पर जब मसीह वापस आएगा तो परमेश्वर सारे हिसाब ठीक कर देगा। जिन्होंने सांसारिकता को बोया है वे क्रोध को काटेंगे!

लोभ के पाप को उतार दें

पौलुस कहता है, ''अपने उन अंगों को मार डालो, ... लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है'' (कुलुस्सियों 3:5)। फिलिप्स की बाइबल में इस शब्द का अनुवाद ''दूसरे लोगों की चीज़ों की लालसा'' के रूप में हुआ है। फिर से यह चेतावनी विशेषकर आज के लिए हमारे संसार के लिए आवश्यक है। बार बार आधुनिक वाणिज्य के पीछे की प्रेरक शक्ति लालच या लोभी ही होता है।

यह दिलचस्प है कि पौलुस लोभ को मूर्तिपूजा के रूप में बताता है। आज आधुनिक अमेरिका में मूर्तिपूजा अधिक नहीं पाई जाती यानी लोगों को लकड़ी या पत्थर की बनाई हुई

मूर्तियों के आगे झुकने की आदत नहीं है। परन्तु ऐसी मूर्तिपूजा बहुत पाई जाती है जिसमें लोग भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति को परमेश्वर से पहल देते हैं जिस कारण वे वस्तुएं अपने आप ही उनका ईश्वर बन जाती हैं। यही लोग हैं ... यही मूर्तिपूजा है ... और यही पाप है ... और यही हमारे ऊपर परमेश्वर का क्रोध लाता है!

स्वभाव के पापों से पीछा छुड़ाएं

''पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, वैरभाव, ... ये सब बातें छोड़ दो'' (कुलुस्सियों 3:8)। हमें ''क्रोध'' को उतारना है जिसका अनुवाद ''बुरा स्वभाव'' के रूप में हुआ है। क्रोधित होना हमेशा बुरा नहीं होता (इफिसियों 4:26)। एक विशेष प्रकार का क्रोध गलत है। किसी भी प्रकार का क्रोध गलती करवा सकता है! क्रोध को निकाल दें! पौलुस यह भी कहता है कि हम ''क्रोध'' को उतार दें जिसका अनुवाद ''क्रोधपूर्ण आवेग'' (फिलिप्स) और ''आवेश'' (NEB) के रूप में हुआ है। ''वैरभाव'' को भी उतारना आवश्यक है। फिलिप्स के संस्करण में इसका अनुवाद ''बुरे विचार'' के रूप में हुआ है। न केवल हमें अपना आपा खोने से बचना बल्कि दुरभाव को दूर रखना, उनके प्रति जिन्होंने हमारे साथ बुराई की है अपने मनों में वैर भाव न रखना भी है।

जीभ के पापों को मार डालो

पौलुस कहता है, ''तुम भी इन सब को अर्थात ... निंदा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो ...'' (कुलुस्सियों 3:8, 9)। हमें ''निंदा'' को छोड़ना है, जिसका अनुवाद अन्य संस्करणों में ''परमेश्वर की निंदा,'' ''परमेश्वर के विषय में बुरी बातें'' (फिलिप्स), ''श्राप देना'' (NEB); ''मुंह से गंदी बातें'' हुआ है जिसका अनुवाद फिलिप्स में ''गंदी बातचीत'' और NEB में ''गंदी बातें'' हुआ है; और ''झूठ बोलना।''

मसीही व्यक्ति अपनी जीभ को वश में रखने अर्थात किसी भी प्रकार से चाहे वह श्राप के श्राप हो या गंदी बातचीज के द्वारा या झूठ बोलने से हो, अपने होंठों से पाप करने से बचने की कोशिश करता है। यह उसे अपने आस-पास के लोगों से कितना अलग बना देता है!

मसीही व्यक्ति को इन बातों को क्यों उतार देना चाहिए? क्योंकि इस तरह जीना और बातें करना आपकी नई स्थिति के साथ मेल नहीं खाता। इन पापों के विषय में पौलुस कहता है, ''तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे'' (आयत 7)। परन्तु अब तुम्हें उन सब को उतार देना आवश्यक है।

> ... क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसर ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है। उस में न तो ... (कुलुस्सियों 3:9-11)।

आपका जीवन बदल चुका है; अब आप मसीही हैं! ऐसे ही जीवन बिताएं! कालांतर में आप हर प्रकार के पाप के दोषी थी, परन्तु अब आप वैसे नहीं जी सकते! इसके अलावा ''मसीह सब कुछ और सब में है'' इस कारण अब आप के ऊपर संसार का नहीं बल्कि उसी का राज हो!

पग तीनः मसीही गुणों को पहन लें (कुलुस्सियों 3:12-17)

कुलुस्सियों 3:12–17 में इस्तेमाल किया गया रूपक कपड़े बदलने का है। पौलुस ने कहा है कि हमें उन गुणों को जो किसी समय हमारी पहचान थे मार डालना चाहिए और इन सांसारिक खूबियों से खाली हुए स्थानों को भरने के लिए हमें मसीही गुणों को वैसे ही पहन लेना चाहिए जैसे कपड़े पहनते हैं।

मसीही बनना किसी का एक राज्य का नागरिक होने से दूसरे राज्य में बदलना है (कुलुस्सियों 1:13, 14); यह नया जन्म पाने की तरह है (यूहन्ना 3:3–5; 1 पतरस 2:2); यह मुर्दों में से जी उठने की तरह है (इफिसियों 2:1) परन्तु यह कपड़े बदलने की तरह भी है। यशायाह इस बात से आनन्दित था कि परमेश्वर ने उसे ''उद्धार के वस्त्र पहिनाए'' (यशायाह 61:10)। उड़ाऊ पुत्र का उद्धार वस्त्र पहनाने के रूप में दिखाया गया (लूका 15:22)। यीशु ने विवाह के भोज वाले दृष्टांत में कपड़े बदलने का इस्तेमाल उद्धार के प्रतीक के रूप में किया (मत्ती 22:11–14)। स्वर्ग में उद्धार पाए हुए लोगों ने स्वेत वस्त्र पहने हुए होंगे (प्रकाशितवाक्य 7:13, 14)। गलातियों 3:27 में हम पढ़ते हैं, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है।'' तुम ने मसीह को पहन लिया है। जैसा NEB में है, ''तुम सब ने मसीह को वस्त्र की तरह पहन लिया है।''

कुलुस्सियों 3:1–3 में चाहे पौलुस मसीही व्यक्ति के बदलाव को जी उठने से मिलाता है, परन्तु वह यह भी कहता है कि यह कपड़े बदलने की तरह है:

> ... क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है ... इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारणा करो (कुलुस्सियों 3:9–12)।

विचार यह है कि तुम पुराने जीवन के लिए मर गए हो; तुम नये जीवन के लिए जी उठे हो; अब तुम्हें नये कपड़े पहन लेने चाहिए यानी अपने वस्त्र बदल लो और ऐसे कपड़े पहनों जो तुम्हारे नये रुतबे से मेल खाते हैं।

इन नये वस्त्रों पर विचार करें जो हमने पहनने हैं:

दूसरों के लिए चिंता को पहन लें

यह चिंता दो शब्दों से व्यक्त की गई है: पहला ''करुणा'' अर्थात वह गुण है जो मसीही व्यक्ति की पहचान हो सकता है! मसीही व्यक्ति दूसरों की और उनकी आवश्यकताओं की चंता करता है। दूसरा, ''भलाई'' मसीही की पहचान होनी चाहिए! संसार को लग सकता है कि तेज़ होना अर्थात फुर्ती से बदला लेने वाले या दूसरों का अपमान करना और ''उन्हें छोटा दिखाना'' होशियारी की बात है। उसके विपरीत मसीही व्यक्ति हमेशा हर किसी के लिए जिससे वह मिलता है जीवन को आसान बनाने की कोशिश करता है।

दीनता को पहनना

दो शब्द इस विचार पर ज़ोर देते हैं। पहला ''दीनता'' है। KJV में इसका अनुवाद ''मन

की दीनता'' किया गया है; NEB कहता है, ''दीनता।'' मसीही व्यक्ति ''हवा को पहनता'' नहीं है। वह इस बात को समझता है कि वह एक पापी ही है जिसका उद्धार अनुग्रह से हुआ है यानी बिना मसीह के वह किसी काम का नहीं होगा। जीवन में उसका उद्देश्य सेवा कराना नहीं बल्कि सेवा करना है। दूसरा शब्द ''नम्रता'' है। NEB में इस शब्द का अनुवाद ''शराफत'' किया गया है। नम्रता निर्बलता नहीं है बल्कि यह नियन्त्रण में रखी गई सामर्थ है। मसीही व्यक्ति दूसरों के साथ नम्रता से व्यवहार करके शराफत दिखाता है।

उनके प्रति जो हमें निराश करते या दुख पहुंचाते हैं उपयुक्त व्यवहार अपनाओ

विपरीत परिस्थितियों में मसीही व्यक्ति की प्रतिक्रिया के ढंग का वर्णन करते तीन शब्द प्रतीत होते हैं। पहला, सहनशीलता मसीही व्यक्ति की पहचान होनी चाहिए। KJV में इस शब्द का अनुवाद ''धीरज'' किया गया है। विचार यह हो सकता है कि मसीही व्यक्ति विपत्ति में सह लेता है यानी जब ''चलना कठिन हो जाता है'' तो वह ''अपना धर्म छोड़ता'' नहीं है। दूसरा, धैर्य मसीही व्यक्ति की पहचान होनी चाहिए। मसीही लोग अपूर्ण लोगों को सह सकते हैं। दूसरे लोग कमज़ोर हैं; वे गलतियां करते हैं; उनका स्वभाव चिड़ाने वाला है। हम क्या करें? हो सकता है कि हम उनकी गलतियों के बावजूद उन्हें सहन करके उन से प्रेम कर सकें। तीसरा, क्षमा मसीही व्यक्ति की पहचान होनी चाहिए (कुलुस्सियों 3:13)। कलीसिया में भी लोग एक दूसरे के विरुद्ध शिकायतें करने वाले हो सकते हैं! तो क्या? हमें उन आयतों को नहीं भूलना चाहिए जो हमें एक दूसरे के पास जाना सिखाती हैं पर ''मुख्य बात'' यह है कि हमें क्षमा करना चाहिए!

सबके प्रति प्रेम को पहन लो

पौलुस कहता है, ''इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबंध है बांध लो'' (कुलुस्सियों 3:14)। प्रेम मसीही व्यक्तित्व का मुख्य नैतिक यर्थात, सबसे बड़ी आवश्यकता, शान और विलक्षण प्राप्ति है। प्रेम सबसे महत्वपूर्ण है। और प्रेम ''सिद्धता का कटिबंध है।'' इसका अर्थ शायद है कि अन्य सभी गुणों को प्रेम के द्वारा उचित अनुपात में एक ही व्यक्तित्व में इकट्ठा किया जाता है। या यूं कहें कि मसीही व्यक्ति के लिए एकता में रहना सम्भव प्रेम से ही होता है।

ऐसे गुणों और व्यवहारों को पहन लें जो कलीसिया की उन्नती करते हैं

परमेश्वर के लोगों के रूप में हमारे जीवन की बात करती तीन खूबियां लगती हैं। *शांति* मसीही समाज की पहचान होनी चाहिए (कुलुस्सियों 3:15क)। शांति मसीही व्यक्ति के मन पर राज करने वाली होनी चाहिए। जब मसीही लोग परमेश्वर के साथ शांति यानी सुलह से रहते हैं तो वे एक दूसरे के साथ भी सुलह से रहेंगे। इसके अलावा *धन्यवाद* मसीही समाज की पहचान होनी चाहिए (कुलुस्सियों 3:15ख)। हम व्यक्तिगत रूप में धन्यवादी हैं और आराधना के लिए इकट्ठा होने पर कलीसिया को सामूहिक रूप में अपने धन्यवाद व्यक्त करते रहना चाहिए। *आराधना* मसीही समाज की पहचान होनी चाहिए (कुलुस्सियों 3:16)। मसीही लोग परमेश्वर की आराधना करते रहते हैं। विशेष रूप में मसीही लोग वे हैं जो गीत में परमेश्वर की स्तुति करते और एक दूसरे को समझाते हैं।

सारांश

जो कुछ हम ने कहा है उसे संक्षिप्त कैसे करें? मसीही व्यक्तित्व के वर्णन का प्रयास करते हैं। यदि आप किसी को देखते हैं तो आप उसे कैसे पहचानेंगे? कल्पना करें कि कोई जिसका उद्धार मसीह के द्वारा हो गया है, इसलिए उसने अपने आपको पूरी तरह से प्रभु को समर्पित कर दिया है। उसके जीवन पर संसारिक बातों के बजाय आत्मिक बातें हावी हैं हम अपने समय के लिए उसके लिए जो कुछ मसीह ने किया है उस पर विचार करना है। वह अपने आपको मसीही में डूबा हुआ मानता है और उस दिन की राह देखता है जब वह महिमा में मसीह के साथ होगा

इसके साथ ही वह संसारिकता के त्याग के लिए अपनी पूरी कोशिश करता है। वह मसीह-सा बनने की कोशिश करता है। वह दयालु है, रहमदिल, दयालु, दीन, विनम्र, धीरजवंत, सहिष्णु, क्षमा करने वाला और प्रेम करने वाला है। वह अपने आप में और दूसरों के साथ शांति में है। वह हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद करता है। संक्षेप में मसीही व्यक्तित्व वाला व्यक्ति कुलुस्सियों 3:17 को मानने का पूरा यत्न करता है: ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।'' यदि आप ऐसा करते हैं तो आप वास्तव में मसीही व्यक्तित्व को पाने में सफल हो जाएंगे।